



॥ श्री कामदेव कथा ॥
॥ ॐ क्लीं कामदेवाय नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री कामदेव कथा ॥

भगवान कामदेव प्रेम, आकर्षण, सौहार्द, दाम्पत्य सुख और सृष्टि के विस्तार के अधिष्ठाता देव माने जाते हैं। उनका स्वरूप अत्यंत मनोहर बताया गया है। वे पुष्पों से बने धनुष और पाँच पुष्पबाण धारण करते हैं तथा उनका ध्वज मकर (जलचर) के चिह्न से सुशोभित रहता है। उनकी अर्धांगिनी देवी रति हैं, जो प्रेम, समर्पण और दाम्पत्य निष्ठा की प्रतीक मानी जाती हैं।

कथा प्रारम्भ

प्राचीन काल की बात है। एक समय असुर तारकासुर ने कठोर तप करके महान वरदान प्राप्त कर लिया। उस वरदान के प्रभाव से वह अत्यंत शक्तिशाली बन गया और देवताओं, ऋषियों तथा समस्त लोकों को कष्ट देने लगा। देवगण अनेक बार उसका सामना करते, किन्तु उसे पराजित न कर सके।

अंततः सभी देवता भगवान ब्रह्मा के पास पहुँचे। ब्रह्माजी ने बताया कि तारकासुर का वध केवल भगवान शिव के पुत्र द्वारा ही संभव है। उस समय भगवान शिव माता सती के वियोग के बाद गहन तपस्या में लीन थे और संसार से पूर्णतः विरक्त हो चुके थे।

उधर हिमालय की पुत्री देवी पार्वती भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप कर रही थीं। देवताओं ने विचार किया कि यदि भगवान शिव का ध्यान पार्वती जी की ओर आकर्षित हो जाए, तो उनका विवाह होगा और भविष्य में उनके पुत्र द्वारा तारकासुर का अंत संभव होगा।

देवराज इन्द्र ने भगवान कामदेव से निवेदन किया कि वे भगवान शिव की तपस्या भंग कर देवताओं का कल्याण करें। कामदेव जानते थे कि यह कार्य अत्यंत कठिन है, फिर भी लोकमंगल की भावना से उन्होंने देवताओं का आग्रह स्वीकार कर लिया।

वसंत ऋतु का आगमन हुआ। चारों ओर पुष्प खिल उठे, मंद-मंद सुगंधित पवन बहने लगी, पक्षियों का मधुर कलरव वातावरण में गूँजने लगा। भगवान कामदेव ने अपने पुष्पधनुष पर प्रेम का पुष्पबाण चढ़ाया और

भगवान शिव की ओर छोड़ दिया।

जैसे ही पुष्पबाण का प्रभाव हुआ, भगवान शिव का ध्यान कुछ क्षण के लिए विचलित हुआ। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से जाना कि उनकी तपस्या भंग करने का प्रयास किसने किया है। भगवान शिव ने क्रोधित होकर अपना तृतीय नेत्र खोल दिया। उसके तेज से भगवान कामदेव का स्थूल शरीर तत्काल भस्म हो गया।

यह समाचार सुनकर देवी रति अत्यंत व्यथित हुई। उन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या और स्तुति की तथा अपने पति को पुनः जीवन प्रदान करने की करुण प्रार्थना की। देवी रति की निष्ठा, प्रेम और तप से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने वरदान दिया कि कामदेव अब बिना स्थूल शरीर के "अनंग" अर्थात् देह-रहित रूप में समस्त प्राणियों के हृदय में प्रेम, स्नेह और आकर्षण का संचार करेंगे।

समय बीतने पर भगवान शिव ने देवी पार्वती का तप स्वीकार किया और उनका दिव्य विवाह संपन्न हुआ। बाद में भगवान कार्तिकेय का जन्म हुआ, जिन्होंने तारकासुर का वध करके देवताओं को भयमुक्त किया। इस प्रकार भगवान कामदेव का त्याग और उनका लोकहित का कार्य समस्त सृष्टि के कल्याण का कारण बना।

कुछ परंपराओं में यह भी वर्णित है कि भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण और देवी रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को भगवान कामदेव का पुनर्जन्म या अंशावतार माना जाता है। इस मान्यता के अनुसार प्रेम का दिव्य स्वरूप पुनः संसार में प्रतिष्ठित हुआ।

समापन प्रार्थना

हे भगवान कामदेव!

हमारे हृदय में सदैव पवित्र प्रेम, करुणा, सम्मान, संयम और मधुरता का वास हो।

हमारे परिवार में विश्वास, सौहार्द और मंगल बना रहे।

आपकी कृपा से हमारा जीवन धर्ममय, सुखी और कल्याणकारी बने।